Sociology

B-II (H) Paper - III

Q→ Discuss the features or characteristics of Indian rural life? भारतीय ग्रामीण जीवन के लक्षणों या विशेषताओं का उल्लेख करें।

Ans→ आज ग्रामीण जीवन पद्धति नगरीय जीवन पद्धति द्वारा प्रभावित हो रही है। फलस्वरूप ग्रामीण जीवन पद्धति की विशेषताओं का वर्णन करना एक कठिन कार्य प्रतीत है। साथ ही ग्रामीण जीवन पद्धति विभिन्न कारकों के परिणामस्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हो रहा है। इस कारण से भी ग्रामीण जीवन की विशेषताओं को स्पष्ट चित्र प्रस्तुत करना भी एक कठिन कार्य प्रतीत होता है किंतु इन कठिनाईयों के बावजूद भी ग्रामीण जीवन की कुछ विशेषताओं का उल्लेख किया जा सकता है जो इस प्रकार हैं:-

(1) सरल एवं सादा जीवन (Simpale Living) ग्रामीन जीवन की पहली विशेषता सरल व सादा जीवन कहा गया है। इसका मतलब ग्रामीण वासी सरल व सादा जीवन व्यतित करते हैं न कि कृत्रिम। इनका भोजन सादा व सरल तथा पौष्टिक होता है। ग्रामीणों के बीच सादगी देखने को मिलती है। अतः ग्रामीणों में छल-कपट भी नहीं होती है एवं इनका जीवन शुद्ध होता है।

(2) परिवार की प्रधानता → ग्रामीण जीवन की दुसरी विशेषता परिवार की प्रधानता है। एक व्यक्ति की स्थिति का निर्धारण उसके परिवार की स्थिति से होता है। यदि परिवार की प्रतिष्ठा उच्च होती है तो उस व्यक्ति का भी उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। व्यक्ति पर नियंत्रण रखने में भी परिवार की मुख्य भूमिका होती है। व्यक्ति कोई गलत कार्य न करें कि उससे परिवार की प्रतिष्ठा धूल में मिल सके।

(3) सामुदायिक भावना → ग्रामीण जीवन की सामुदायिक भावना तिसरी विशेषता बतलाई गई है इसका कारण है कि ग्रामीणों में हम समूह की भावना विशेष पाई जाती है। ग्रामीणों में स्त्रियों को एक-दुसरे से अधिक लगाव रहता है। गाँववासियों में अत्यधिक सहयोग की भावना भी दृढ़ होती है।

M. N. Shrinivas ने अपने एक लेख 'A mysore village' में भी इस तथ्य की पुष्टि किया है एवं लिखा है "अपने ग्राम के प्रति गर्व की भावना सामान्य है।

(4) धर्म, प्रथाओं आदि का अधिक महत्व → इसका अर्थ ग्रामीण में धर्म, प्रथा, जनरीति, लोकाचार आदि का विशेष महत्व है। किसी भी कार्य को आरंभ करने से पूर्व पूजा-पाठ करना सामान्य बात है। प्रत्येक कार्य के संदर्भ में पाप-पुण्य की भावना अत्यधिक है ठिक उसी तरह जनरीति, लोकाचार, का भी प्रभाव है। Bisenge & Bisenge के अनुसार जनरीतियाँ और जनरूढ़ियाँ अधिकांश व्यवहारों को नियंत्रित करती है।" ग्रामीण जीवन मे प्रथा शासक होती है और जनरीतियाँ और जनरूढ़ियाँ अधिकांश व्यवहारों को नियंत्रित करती है।"

In rural community, custom in king, the folkways & mores control most of behaviours)

(5) रूढ़िवादिता :- इसका अर्थ है कि ग्रामीण व्यक्तियों का दृष्टिकोण रूढ़िवादी होता है। वे वर्तमान व्यवस्था के कट्टर अनुयायी तथा समर्थक होते है। और किसी भी परिवर्तन को तबतक पसंद नही करते जबतक कि उन्हे उसकी आवश्यकता नही होती। ग्रामीणो के जीवन स्तर पर M.H. Neu Puger के अनुसार "ग्रामीण संस्कृति रूढ़िवादिता की ओर झुकी रहती है। (Rural Culture tends tobe Conservation)"

(6) कृत्रिमता से दूर → ग्रामीण जीवन की यह छठी विशेषता है। ग्रामीण कृत्रिमता के विरोधी होते है एवं फैशन आदि को अधिक पसंद नही करते है। बोगार्डस ने भी इस विशेषता का उल्लेख किया है।

(7) सामाजिक गतिशीलता की कमी → इसका अर्थ यह नही कि ग्राम वासियों में सामाजिक गतिशीलता नही पाई जाती है। शहरों की अपेक्षा यहाँ सामाजिक गतिशीलता कम पाई जाती है। Nagmul Karim ने लिखा है कि संसार की कोई भी वस्तु स्थिर नही रहती है, किंतु एक लम्बी अवधी के बादभी ग्रामीण समुदाय वैसे के वैसे ही है।

P. A. Sorokin ने भी कहा है कि नगरीय समुदाय में पायी जाने वाली गतिशीलता की तुलना कौरसी के उबलते हुए जल से किया है एवं ग्रामीण जीवन में पायी जाने वाली

शान्त घड़े के जल से किया है और बताया है कि जिस तरह शान्त घड़े का जल स्थिर रहता है उसी तरह ग्रामीणों के जीवन में भी उतार चढ़ाव बहुत कम होता है।

(8) रहन-सहन का निम्न स्तर → इसका मतलब यह है कि ग्रामवासियों का जीवन-स्तर अत्यंत ही निम्न होता है। गाँव निर्धनता का केन्द्र है। ग्रामवासियों निर्धनता के कारण अपने जीवन के स्तर को उच्च उठाने का प्रयास करते है लेकिन फिर भी वह असमर्थ रहते है। साथ में गाँवों में शिक्षा का अभाव एवं बचत की भावना दृढ़ पाई जाती है। वे गंदे व संकीर्ण मकानों में रहते हैं एवं साधारण गंदे वस्त्रो का प्रयोग करते है। अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति तो ठिक ढंग से नहीं होती तो मनोरंजन व आराम की वस्तुओं का प्रयोग कहाँ से करेंगे। अतः स्पष्ट है कि ग्रामीणों का रहन-सहन का स्तर निम्न होती है।

(9) अशिक्षा एवं अन्धविश्वास → इसका अर्थ ग्रामीण लोग ज्यादा तर अशिक्षित होते है। वे अशिक्षा के कारण अन्धविश्वासी एवं कुसंस्कारों का शिकार बने होते है। वे भूत-प्रेत जादू-टोना में अत्यधिक विश्वास करते है। अशिक्षित रहने के कारण वे भाग्यवादी भी बने रहते है।

(10) विशेषीकरण का अभाव → गाँव के एक लोग सभी कार्य स्वयं कर लेते है। किसी भी कार्य में विशेषीकरण प्राप्त नही किए रहते है। इसलिए यहाँ विशेषीकरण का अभाव पाया जाता है। कुछ गाँव के लोग को Jack of all Trades भी कहा जाता है।

(11) जजमानी प्रथा → गाँव में प्रत्येक जाति के सदस्य अपने निश्चित परम्परागत पेशों के आधार पर दूसरों की सेवाएँ प्रदान करते है। इसमें सेवा प्रदान करने वाले कमीन एवं सेवा ग्रहण करने वाले जजमान कहा जाता है। इन दोनो का सम्बन्ध वंशानुगत होता है। जजमान अपने कमीन को उसकी सेवा के बदले अकसर हो वस्तु के रूप में भुगतान करते है।

(12) कृषि की प्रधानता → ग्रामीण समाज में कृषि को प्रधानता दिया जाता है। क्योंकी जनसंख्या का 80% लोग कृषि को ही मुख्य व्यवसाय के रूप में मानते है। एवं इसी से ही इनका जीवन बसर चलता है।

Scanned with CamScanner

A

(13) संयुक्त परिवार → ग्रामीण समाज में संयुक्त परिवार की प्रथा ज्यादा देखने को मिलती है। क्योंकी ग्रामीण समाज कृषि पर आश्रित रहता है और कृषि के लिए 2, 4, 6, की नहीं बल्कि अनगिनत व्यक्ति का जरूरत होता है। साथ ही यहाँ का सम्बन्ध भी व्यक्तियों को आपस में सहयोगात्मक रूप में होती है।

(14) अंतः विवाह → ग्रामीण वासियों के बीच वैवाहिक सम्बन्ध अपने ही गोत्र, जाति के सदस्यों के बीच होती रहती है। क्योंकी यहाँ का समाज सदस्यों को ऐसा करने के लिए बाध्य करती है। और ऐसा नहीं करने वाले को समाज बहिस्कृत कर देती है।

(15) जाति प्रथा दृढ़ → ग्राम वासियों के बीच आज भी जाति प्रथा दृढ़ मानी जाती है। प्रत्येक व्यक्ति अपने से निम्न से छुआछुत मानते हैं। अगर कोई ब्राह्मण है तो वे शुद्र से अपने को अलग रखने का प्रयास करते हैं। कभी संयोगवश वे अपने को अछुत मानते हैं तो कई पूजा-पाठ करते हैं तब वे अपने को पवित्र मानते हैं।

(16) स्त्रियों की निम्न स्थिति → गाँव में स्त्री को निम्न स्थिति प्राप्त होती है। वे आज भी पर्दा-प्रथा में रहती है। उन्हे बहुत कम ही पढ़ाई हो पाती है क्योंकी घर से बाहर निकलना उन्हे सख्त मना होता है। इसलिए स्त्रियाँ अपने अधिकार व कर्तव्य को सही ढंग से नहीं समझ पाती हैं जिस कारण उन्हे समाज में मर्दों की अपेक्षा निम्न स्थिति प्राप्त रहती है।

S.N. Choudhary